International Journal of Literacy and Education

E-ISSN: 2789-1615
P-ISSN: 2789-1607
Impact Factor: RJIF 5.7
IJLE 2024; 4(2): 39-41
www.educationjournal.info
Received: 05-06-2024
Accepted: 10-07-2024

डॉ. महेन्द्र मणि तिवारी
असिस्टेंट प्रोफेसर (बी.एड. विभाग), फिरोज गांधी डिग्री कॉलेज, रायबरेली, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. महेन्द्र मणि तिवारी
असिस्टेंट प्रोफेसर (बी.एड. विभाग), फिरोज गांधी डिग्री कॉलेज, रायबरेली, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं में विद्यालय वातावरण का शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव का अध्ययन

डॉ. महेन्द्र मणि तिवारी

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र सतना जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं में विद्यालय वातावरण का शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव का अध्ययन पर आधारित है। शिक्षा के लिए वातावरण महत्वपूर्ण है प्रत्येक बच्चे का पालन–पोषण और विकास एक विशिष्ट परिवेश में होता है। इस परिवेश ने उसके विकास में बड़ा योगदान दिया है। बहुत सी प्रतिभाएं सही परिस्थितियों में विकसित नहीं होती हैं। अतः बालक की जन्मजात शक्तियां भौतिक वातावरण में विकसित होती हैं। यदि जन्मजात शक्तियां शिक्षा का आधार हैं, तो वातावरण शिक्षा का माध्यम खाद और जलवायु है, और शिक्षा का परिणाम बालक की अंतनिर्हित शक्तियों का सर्वोत्तम विकास है। बालक की अंर्तिनिहित शक्तियों का विकास ही उसे सफलता देता है।

कूटशब्दः उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, छात्र–छात्राएं, विद्यालय वातावरण, शैक्षिक निष्पत्ति, प्रभाव

प्रस्तावना
आजकल समाज में कई तरह के स्कूल चल रहे हैं। इनमें अंग्रेजी माध्यम, हिन्दी माध्यम, आवासीय, निजी, आदि शामिल हैं। विद्यालयों का वातावरण कई चीजों से प्रभावित होता है, जैसे शिक्षकों की क्षमता, विद्यालय में उपलब्ध सुविधाएं, शिक्षकों का चरित्र, विद्यार्थियों का पारिवारिक वातावरण, विद्यालय की प्रतिस्पर्धात्मक प्रवृत्ति और अभिभावकों का शैक्षिक और सामाजिक स्तर। विद्यालयों से प्रत्येक माता–पिता की उम्मीद है कि वे अपने बालकों पर बेहतर प्रभाव डाल सकें। वे उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं और भविष्य में घर, समाज और कार्यस्थल में सुसंगत हो सकते हैं। विद्यालय का वातावरण एक विद्यार्थी की आगे की उन्नति पर बहुत प्रभावी होता है।
स्वामी विवेकानन्द के अनुसार – ''शिक्षा मनुष्य के अन्दर सन्निहित पूर्णता का प्रदर्शन है।'' शिक्षा के आदान–प्रदान की प्रक्रिया अतीत काल से चली आ रही है। मानव कुछ पाश्विक प्रवृतियां लेकर असहाय रूप में इस विश्व में प्रवेश करता है शिक्षा के द्वारा उसकी जन्मजात पाश्विक प्रवत्तियों का शोधन तथा मार्गान्तीकरण होता है, जिसके परिणामस्वरूप वह सामाजिक प्राणी बनता है। वास्तव में शिक्षा के अभाव में मानव की प्रगति निश्चेष्ट हो जाती है और उसमें तथा अन्य प्राणियों में बहुत अन्तर रह जाता है।
विद्यालय एक पवित्र हवनशाला हैं, जहां ज्ञान और अनुभव शिक्षकों के मन में जलते हैं और उनकी ज्वालाओं से सुनागरिक बनाए जाते हैं। हवन शाला की गंध से समाज उत्साहित होता है शिक्षक अपने पूरे सेवाकाल में ज्ञान का प्रसार करते रहते हैं। विद्यालय विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन का अनुभव देता है और उन्हें देश की एकता और नागरिकता का पाठ सिखाता है, जिससे वे अपने नैतिक जीवन को ऊंचा उठाते हैं। इसमें विद्यार्थी शामिल हैं। यह विद्यार्थियों को शैक्षिक उपलब्धि हासिल करने के लिए प्रेरित करता है, उनकी सामाजिक भावना को विकसित करता है, उनके पास मौजूद योग्यताओं और क्षमताओं को विकसित करता है, अपने स्वतंत्र विचारों को विकसित करता है और ज्ञान का उचित उपयोग करता है। साथ ही उनमें समायोजन की क्षमता भी विकसित करता है। बालक बाल्यावस्था से किशोरावस्था तक अपना व्यक्तित्व बनाता है और अधिकांश समय विद्यालय में बिताता है।
शिक्षा के लिए वातावरण महत्वपूर्ण है प्रत्येक बच्चे का पालन–पोषण और विकास एक विशिष्ट परिवेश में होता है। इस परिवेश ने उसके विकास में बड़ा योगदान दिया है। बहुत सी प्रतिभाएं सही परिस्थितियों में विकसित नहीं होती हैं। अतः बालक की जन्मजात शक्तियां भौतिक वातावरण में विकसित होती हैं। यदि जन्मजात शक्तियां शिक्षा का आधार हैं, तो वातावरण शिक्षा का माध्यम खाद और जलवायु है, और शिक्षा का परिणाम बालक की अंतनिर्हित शक्तियों का सर्वोत्तम विकास है। बालक की अंर्तिनिहित शक्तियों का विकास ही उसे सफलता देता है। यह प्रभाव जानने के लिए शोधकर्ता ने इस संबंध में अधिक अध्ययन करने की इच्छा व्यक्त की।

अध्ययन की आवश्यकता
विद्यार्थियों का मन बहुत ग्रहणशील होता है, उनके आसपास के परिवेश ने उनके दिमाग पर गहरी

छाप डालनी चाहिए। बालकों की शारीरिक और मानसिक क्षमता के विकास में विद्यालय का वातावरण भी महत्वपूर्ण होता है। विद्यालय वातावरण में कई चीजें शामिल हैं, जैसे विद्यालय का परिवेश, शिक्षक उपकरण, कक्षा–कक्ष, फर्नीचर, स्वच्छता और सौन्दर्यकरण, आदि, जो प्रत्यक्ष रूप से विद्यार्थियों के मन–मस्तिष्क पर प्रभाव डालते हैं। इससे उनकी उपलब्धियाँ प्रभावित होती हैं। बालक का मन सफेद कागज की तरह होता है, इसलिए शिक्षक उसे चाहे जैसा बनाना चाहे बनाता है। इसलिए विद्यार्थियों को सही दिशा देने में शिक्षक और स्कूल का परिवेश महत्वपूर्ण हैं। बालको में सृजनशीलता है, लेकिन उचित परामर्श, वातावरण और आवश्यक सामग्री के बिना, विद्यार्थी अपने को असहाय और अधूरा महसूस करते हैं। शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थी जीवन में आने वाले अवसरों का लाभ उठा सकते हैं, लेकिन विद्यालय परिवेश इसके लिये बहुत कुछ करता है।

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल सतना जिले वरन् सम्पूर्ण मध्यप्रदेश के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं में विद्यालय वातावरण का शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव की वर्तमान स्थिति तथा उसमें आने वाली कठिनाइयों का आंकलन किया जा सकेगा।

उद्देश्य

अनुसंधान का मूल उद्देश्य पुराने तथ्यों का पुनः परीक्षण करके जीवन तथा घटनाओं के बारे में ज्ञान में वृद्धि करना है और इसे नवीन बनाना है। इस उद्देश्य में पहले से स्थापित सिद्धांतों की जाँच और परीक्षण भी शामिल है। इसमें मौलिक सिद्धांतों पर अध्ययन किया जाता है। इसमें नवीन परिस्थितियों, समस्याओं और ज्ञान की खोज की आवश्यकता होती है। इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए नवीन सिद्धांतों का अध्ययन किया जाता है, जो तत्काल समस्याओं का समाधान कर सकते हैं। अनुसन्धान बौद्धिक उद्देश्य की पूर्ति में महत्वपूर्ण योगदान देता है, नवीन तथ्यों को संपादित करके और पुराने तथ्यों की पुनःपरीक्षा करके। शोध का उद्देश्य निम्नानुसार है–

- उच्च शैक्षिक स्तर के अभिभावकों के विद्यार्थियों की एवं निम्न शैक्षिक स्तर के अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
- उच्च शैक्षिक स्तर के अभिभावकों के विद्यार्थियों की एवं निम्न शैक्षिक स्तर के अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनायें

प्रायः प्रायः मानव तथ्यों तथा प्राथमिक अध्ययन के आधार पर समस्या के समाधानों के लिए अपना अनुमान लगाता है। मानव द्वारा लगाये गये अनुमानों को ही परिकल्पनाएँ कहा जाता है। शोध की परिकल्पनाएँ निम्नानुसार है–

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के विद्यालय वातावरण का उनकी शैक्षिक निष्पति पर सार्थक प्रभाव नहीं पडता है।

शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र जिला सतना है। इसके अन्तर्गत 8 विकासखण्ड – सतना (सोहावल), चित्रकूट (मझगवाँ), रामपुर बघेलान, नागौद, ऊचेहरा, अमरपाटन, रामनगर एवं मैहर हैं। अतः जिला अन्तर्गत स्थित उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालय सम्मिलित होगें।

शोध विधियाँ

शोध कार्य को संपूर्णता प्रदान करने हेतु सांख्यिकी विधि का उपयोग किया गया है।

सांख्यिकी विधि

प्रयुक्त शोध उपकरणों से प्राप्त प्रदत्तों के सारणीयन के उपरान्त आवश्यकतानुसार माध्य, माध्यिका एवं बहुलक, दो चरों में सार्थक अन्तर के आंकलन हेतु मध्यमान विचलन, टी–परीक्षण जैसी सांख्यिकी विधियों का आवश्यकतानुसार प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श चयन

सतना जिला का क्षेत्र व्यापक है, जिस कारण सभी उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों का अध्ययन करना संभव नहीं है, इसलिए जिले के सभी विकासखण्डों से 5–5 विद्यालय कुल 40 विद्यालयों का चयन दैव निदर्शन द्वारा अध्ययन हेतु लिया गया। विद्यालयों का चयन करते समय यह विशेष रूप से ध्यान रखा गया कि सभी विकासखण्डों के विद्यालय ऐसे हो जो अपने–अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर सके तथा ये सभी विद्यालय शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों से संबंधित हो। उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र 200 जिसमें शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के बच्चे 100 और अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के बच्चे 100 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु लिया गया है। इस प्रकार यह अध्ययन दोनों दृष्टियों से सैद्धान्तिक एवं अनुभवाश्रित परिपूर्ण होगा।

पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं में विद्यालय वातावरण का शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव का अध्ययन करने पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – कपिल, एच.के. (1996) [1], शर्मा, ओ.पी. (2004) [2], शर्मा वीरेन्द्र प्रकाश (2004) [3], अग्रवाल, अनिल (2005) [4], अरोडा, रीता एवं मारवाह, सुदेश (2007) [5], गुप्ता, एस.पी. तथा गुप्ता, अल्का (2007) [6], दुबे, प्रो. एल.एन. एवं बरोदे, प्रो. बी.आर. (2009) [7], माथुर,एस.एस. (2012) [8] एवं अग्रवाल, श्वेता (2015) [9].

शोध क्षेत्र का परिचय

भारत के हृदय स्थल में बसा मध्यप्रदेश अपने आप में विभिन्न संस्कृतियों, पुरासम्पदाओं, प्राकृतिक सौंदर्यता, अनमोल धरोहरों, धार्मिक स्थलों, अनुपम कलाकृतियों से सुसज्जित है। सतना मध्यप्रदेश के उत्तर पूर्वी सीमा के मध्य स्थित वर्तमान रीवा संभाग का एक महत्वपूर्ण व्यवसायिक एवं औद्योगिक प्रधान जिला है। जिले के उत्तर में उत्तर प्रदेश का बाँदा जिला पूर्व में रीवा एवं सीधी जिला, दक्षिण में शहडोल व जबलपुर जिला, तथा पश्चिम में पन्ना जिला स्थित है। जिला अपनी धार्मिक विरासतों, औद्योगिक संस्थानों, सांस्कृतिक ऐतिहासिक परिदृश्यों, प्रमुख वनोपज एवं खनिज के कारण सर्वोच्च शिखर पर है। जिला वीर, पराक्रमी, योद्धाओं, वीरांगनाओं, सेनानियों आदि से जाना पहचाना जाता है।

सतना जिला 23.58°–25.12° उत्तरी अक्षांश 80.12 – 81.23° पूर्वी देशान्तर पर स्थिति है। जिले समुद्र तल से ऊँचाई 317 मी. है, नागौद 626 मी., अमरपाटन और मैहर 537.06 मीटर है।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है

सारणी 1: उच्चतर माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का अध्ययन

समूह	संख्या	सामान्तर माध्य	मानक विचलन	मध्यमान का अन्तर	अनुपात
शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थी	100	30.60	10.23	5.19	3.73
अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थी	100	35.79	9.41		

$d.f = (N_1-1) + (N_2-1)$
$= (100-1) + (100-1)$
$= 99+ 99$
$= 198$

विश्लेषण एवं व्याख्या

शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है। सांख्यिकी विश्लेषण से स्पष्ट है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का औसत मध्यमान 30.60 तथा मानक विचलन 10.23 है तथा अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का औसत मध्यमान 35.79 तथा मानक विचलन 9.41 है।

उच्चतर माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का सार्थकता सारणी में किया गया है। दोनों समूहों की औसत मध्यमान में अंतर की गणना 't' परीक्षण के द्वारा की गई है। गणना से प्राप्त मध्यमान में अंतर 5.19 और 't' का मान 3.73 है।

198 d.f. पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.60 एवं 0.05 विश्वास स्तर पर 1.65 है, जबकि गणना से प्राप्त 't' का मान 3.73 है जो कि दोनों विश्वास स्तरों पर मानक मानों से अधिक है। अतः उच्चतर माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण में सार्थक अन्तर है।

अतः परिकल्पना निरसित होती है।

सारणी 2: उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के विद्यालय वातावरण का उनकी शैक्षिक निष्पति पर प्रभाव का अध्ययन

समूह	संख्या	सामान्तर माध्य	मानक विचलन	मध्यमान का अन्तर	अनुपात
छात्र	100	32.70	9.68	**4.30**	**3.24**
छात्राएं	100	28.40	8.97		

$d.f = (N_1-1) + (N_2-1)$
$= (100-1) + (100-1)$
$= 99+ 99$
$= 198$

विश्लेषण एवं व्याख्या

उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के विद्यालय वातावरण का उनकी शैक्षिक निष्पति पर प्रभाव का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है। सांख्यिकी विश्लेषण से स्पष्ट है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों के विद्यालय वातावरण का उनकी शैक्षिक निष्पति पर सार्थक प्रभाव का औसत मध्यमान 32.70 तथा मानक विचलन 9.68 है तथा छात्राओं के विद्यालय वातावरण का उनकी शैक्षिक निष्पति पर प्रभाव का मध्यमान 28.40 तथा मानक विचलन 8.97 है।

उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के विद्यालय वातावरण का उनकी शैक्षिक निष्पति पर प्रभाव का सार्थकता सारणी में किया गया है। दोनों समूहों की औसत मध्यमानों में अंतर की गणना 't' परीक्षण के द्वारा की गई है। गणना से प्राप्त मध्यमान में अंतर 4.30 और 't' का मान 3.24 है।

198 d.f. पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.60 एवं 0.05 विश्वास स्तर पर 1.65 है, जबकि गणना से प्राप्त 't' का मान 3.24 है जो कि दोनों विश्वास स्तरों पर मानक मानों से अधिक है। अतः उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के विद्यालय वातावरण का उनकी शैक्षिक निष्पति पर सार्थक प्रभाव पडता है।

अतः परिकल्पना सत्यापित है।

निष्कर्ष

- उच्चतर माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण में सार्थक अन्तर है।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के विद्यालय वातावरण का उनकी शैक्षिक निष्पति पर सार्थक प्रभाव पडता है।

संदर्भ

1. कपिल एच.के.: सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1996.
2. शर्मा ओ.पी.: ग्रामीण क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी, प्रतियोगिता दर्पण अप्रैल, 2004.
3. शर्मा वीरेन्द्र प्रकाशः रिसर्च मेथडॉलॉजी, प्रचशील प्रकाशन, जयपुर, 2004.
4. अग्रवाल अनिलः भारत में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, मंथन प्रकाशन, इलाहाबाद, 2005.
5. अरोडा रीता, मारवाह, सुदेशः शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी, चौड़ा रास्ता, जयपुर, शिक्षा प्रकाशन, 2007.
6. गुप्ता एस.पी., गुप्ता अल्काः आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन, 2007.
7. दुबे एल.एन., बरोदे बी.आर.: शिक्षा मनोविज्ञान, आरोही प्रकाशन, साउथ सिविल लाइन्स, जबलपुर, प्रथम संस्करण, 2009.
8. माथुर एस.एस.: शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 2012.
9. अग्रवाल श्वेताः 'उच्च माध्यमिक बालक एवं बालिका विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन', जर्नल ऑफ एज्यूकेषन साइकोलॉजी, वॉल्यूम XXXII, जुलाई 2015.